ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-10 अंक : 108

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जनवरी : 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

भारत कुमार असुविधाओं के बीच
सफलता का प्रतीक है ।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

भारत कुमार समग्र भारत के दिव्यांगो के
आत्मविश्वास का प्रतीक है।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

दिल दहला देने वाली कठिनाइयों के बाद भी भारत का जीवन सकारात्मकता की उर्जा से भरा है । अनगिनत कठिनाइयों के बाद मिली सफलता का वे स्वाद उठा भी नहीं पाए कि उन्हें जीवन में कडवे घूंट पीने पडे हैं । इस उपलब्धि को हासिल करने और मुश्किलों को अपने पक्ष में मोड़ने के बाद भी, बेचारे भरत के भारत को गौरवान्वित करने में योगदान को दुखद रूप से नज़र अंदाज़ कर दिया गया । आज, उन्हें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कारें धोने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है और स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि उन्हें पैसे कमाने के लिए अपनी कड़ी मेहनत से जीते गए पदक बेचने पड़े ऐसी स्थिति का निर्माण हो यह भारत कुमार की असफलता ही है बल्कि हमारे समाज की भी यह सब से बड़ी विफलता हैं ।

भारत एक ऐसा सितारा है जिसकी चमक हमारी तथाकथित व्यवस्था द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम खिलाड़ियों के प्रति बरती गई सख्ती के कारण फीकी पड़ गई है । दो अंतरराष्ट्रीय खिताब जीते हैं, एक आयरलैंड में आयोजित IWAS विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत और एक स्वर्ण पदक, और 40 से ज़्यादा राष्ट्रीय स्तर के पदक । लेकिन फिर भी ऐसे सितारे को अपना जीवनयापन करने के लिए पदक बचने के बारे में सोचना पड़े या कार धोकर अपना जीवन व्यतीत करना पड़े यह हमारे समाज के लिए शर्मनाक स्थिति है । ऐसी विडंबनाओं के बाद भी भारत कुमार ने देश के प्रति अपनी निष्ठा को कभी कम नहीं होने दिया ।

केवल फरियाद करने के बदले अपने जीवन यापन के लिए कार तक धोने के काम को किसी शर्म या संकोच के बिना करने वाले भारत कुमार के प्रति हमारी गहरी संवेदनाएं है और सरकार के प्रार्थना है कि उनके जीवन में आई बाधाओं को दूर करने के लिए कोई सकारात्मक कदम उठाए ।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जनवरी : 2026, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-10 अंक : 108

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

50 पदकों के साथ विश्व चैंपियन पैरा-तैराक भारत कुमार को कार धोने के लिए मजबूर होना पड़ा!

भारत कुमार जन्म से ही दाहिने हाथ के साथ पैदा हुए थे, लेकिन उनकी शारीरिक विकलांगता ने उन्हें कभी भी अपने सपनों को पूरा करने से नहीं रोका । 10 दिसंबर 1989 को जन्मे विश्व चैंपियन भारत कुमार ने पैरा- तैराकी प्रतियोगिता में 50 से अधिक पदक जीतकर भारत को गौरवान्वित किया है । लेकिन अगर हम सकारात्मक पहलू पर गौर करें, तो पाएंगे कि उनका जीवन दिल दहला देने वाली कठिनाइयों से भरा है । इस उपलब्धि को हासिल करने और मुश्किलों को अपने पक्ष में मोड़ने के बाद भी, बेचारे भरत के भारत को गौरवान्वित करने में योगदान को दुखद रूप से नज़रअंदाज़ कर दिया गया । आज, उन्हें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कारें धोने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है और स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि उन्हें पैसे कमाने के लिए अपनी कड़ी मेहनत से जीते गए पदक बेचने पड़ सकते हैं । क्रिकेट स्टार वीरेंद्र सहवाग और राष्ट्रीय स्तर के पहलवान सुशील कुमार की तरह , भरत भी हरियाणा (एक ऐसा राज्य जिसने इस देश को कई खिलाड़ी दिए हैं) के मूल निवासी हैं और दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में एक छोटे से घर में रहते हैं । उसके बूढ़े माता-पिता दिहाड़ी मज़दूर हैं और मिट्टी खोदते हैं । उसे तीन छोटे भाइयों की देखभाल करनी है और उसकी दो बहनों की शादी हो चुकी है । एक गरीब परिवार में जन्मे और पले-बढ़े भरत ने भैंस की पूंछ पकड़कर तैरना सीखा! 2002 में तैराकी उनका जुनून बन गई और उन्होंने 2004 में दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में औपचारिक रूप से इसका अभ्यास शुरू किया । उनका कहना है कि उचित प्रशिक्षण और पोषण संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कम से कम 20,000-25,000 रुपये प्रति माह की ज़रूरत होती है। लेकिन उनके प्रशिक्षण के लिए कोई प्रायोजक नहीं है । 27 वर्षीय भरत और उसका परिवार संबंधित अधिकारियों और दिल्ली सरकार के पास गुहार लगा चुके हैं, लेकिन उनकी बार-बार की गई गुहार अनसुनी कर दी गई । स्मृति चिन्ह के रूप में, उनके पदक और हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, एमडीएच के मालिक महाशय धर्मपाल गुलाटी और अन्य बड़ी हस्तियों के साथ उनकी तस्वीरें उनके कमरे की दीवारों पर लगी हुई हैं

। हताश भरत का दावा है कि उसे सरकार से कुछ आर्थिक मदद मिलने की अभी भी उम्मीद है, लेकिन साथ ही वह यह भी मानता है कि उसके धैर्य की काफी परीक्षा हो चुकी है । उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई भी की है । उनका संघर्षपूर्ण जीवन एक प्रेरणादायक कहानी है जो यह साबित करती है कि दृढ़ संकल्प के साथ कुछ भी असंभव नहीं है ।

गरीबी के कारण भारत को कारें धोने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है और उसे अपने पदक बेचने पड़ सकते हैं।

वह एक ऐसा सितारा है जिसकी चमक हमारी तथाकथित व्यवस्था द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम खिलाड़ियों के प्रति बरती गई सख्ती के कारण फीकी पड़ गई है । उसने दो अंतरराष्ट्रीय खिताब जीते हैं, एक आयरलैंड में आयोजित IWAS विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत और एक स्वर्ण पदक, और 40 से ज़्यादा राष्ट्रीय स्तर के पदक । युवा भरत तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए इंग्लैंड, आयरलैंड, हॉलैंड, मलेशिया और चीन जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं । भरत का लक्ष्य एशियाई खेलों और अगले ओलंपिक में भाग लेकर अपने देश को गौरवान्वित करना है । लेकिन यह देश इस बहादुर बेटे को उसका सपना पूरा करने में मदद करने के लिए क्या कर रहा है? एक समाचार चैनल से बात करते हुए भरत ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है और वह व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलना चाहते हैं, ताकि आवश्यक उपकरण खरीदने में मदद मिल सके और आगामी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले सकें । उन्होंने ट्विटर पर खुद को एक अंतरराष्ट्रीय पैरा तैराक, अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता, कार धोने का काम करने वाला और पैसे की कमी के कारण खेल छोड़ने वाला बताया है ।

भारत कुमार के साथ विशेष साक्षात्कार:

प्रश्न- भरत, क्या आप हमें इस खेल में अब तक की अपनी यात्रा के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: मैंने 2004 में दिल्ली के नेहरू स्टेडियम से एक तैराक के रूप में शुरुआत की थी, और अब मेरे पास 50 से अधिक पदक हैं और मैंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है और तैराकी में 2 अंतर्राष्ट्रीय खिताब जीते हैं।

प्रश्न- तैराकी में आपकी रुचि कैसे बढ़ी?

उत्तर- दिल्ली के

पास ग़ाज़ियाबाद और वैशाली को जोड़ने वाली एक नहर है; मैं 2002 में अपनी भैंस के साथ वहाँ तैरा करता था। मेरा जन्म से ही एक हाथ नहीं था, इसलिए मैं भैंसों को चराने ले जाता और फिर उन्हें नहर में नहलाता था। एक दिन मेरे दोस्तों में नहर में कूदने की प्रतियोगिता हुई कि कौन सबसे पहले कूदेगा। मेरी भैंसें नहर में थीं, तो मैं आगे बढ़ा और नदी में कूद गया और अपनी भैंस की पूँछ पकड़कर उसके साथ तैरकर पार कर गया। बस यहीं से मेरी तैराकी शुरू हुई और मुझे 50 पदक मिले, कुछ राष्ट्रीय और कुछ अंतर्राष्ट्रीय।

प्रश्नः भैंसों के साथ तैरने से लेकर अंतरराष्ट्रीय खिताब जीतने तक चुनौतीपूर्ण रहा होगा, हमें उन कठिनाइयों के बारे में बताएं।

उत्तरः समस्याएं और चुनौतियां शुरू से ही थीं। सबसे बड़ी गरीबी है। मेरे माता-पिता दोनों कम वेतन वाली मैनुअल नौकरी करते हैं, मेरे भाई भी ऐसा ही करते हैं। चूंकि मेरे पास सिर्फ एक हाथ था, इसलिए किसी ने मुझे मैनुअल नौकरी भी नहीं दी। नौकरी देने के बजाय वे मुझे दया की नजर से देखते थे और अक्सर कहते थे, "बेचारा आदमी देखो वह कोई काम भी नहीं कर सकता"। मेरे पास कोई नौकरी नहीं थी और मेरी रुचि हमेशा खेलों में थी, यही मैं हर समय करता था इसलिए मुझे लगता है कि इसने मेरे लिए रास्ता बना दिया। गरीबी एक बहुत बड़ी समस्या है, माता-पिता आपको पैसे नहीं दे सकते, मेरे पास नौकरी नहीं थी, कोई मुझे काम नहीं देता इसलिए मेरे दिन मेरे दोस्तों की दया पर चल रहे थे और वे भी मुझे जीवन भर का समर्थन नहीं कर सकते।

लेकिन एक दिन मैंने शाहरुख खान का इंटरव्यू देखा, जिसमें उन्होंने कहा था कि मज़बूत लोग कभी हार नहीं मानते, चाहे कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न हो, वे अपने लक्ष्य हासिल कर ही लेते हैं। और मेरे कोच ने भी कहा कि शाहरुख दिल्ली से हैं और अगर तुम भी कड़ी मेहनत करोगे, तो एक दिन तुम्हारी भी तारीफ़ होगी और तुम भी मशहूर हो जाओगे।

लेकिन फिर भी मैं उसी समस्या से जूझ रहा हूँ। मेरे पास 50 से ज़्यादा मेडल हैं, लेकिन नौकरी नहीं है। जब मैं नौकरी माँगता हूँ तो लोग बस मुझे घूरते रहते हैं, मुझे समझ नहीं आता कि वो क्या देखते हैं, क्या वो बस ना या हाँ नहीं कह सकते। और एक दिन मुझे गुस्सा आया और मैंने सीधे प्रधानमंत्री को ट्वीट कर दिया। मैं वो इंसान नहीं हूँ

जो पैसों के लिए दिल तोड़ता हो, एटीएम तोड़ता हो, बैंक तोड़ता हो या भरोसा तोड़ता हो। मैं हमेशा सकारात्मक सोचता हूँ और दूसरों का भला सोचता हूँ।

प्रश्न- आपने 50 से ज़्यादा पदक जीते हैं, तो आपने कई प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया होगा; क्या आप हमें उन प्रतियोगिताओं के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: अगर भारत के बाहर की बात करें तो मैंने इंग्लैंड, आयरलैंड, हॉलैंड, मलेशिया, चीन आदि में खेला है। मेरे पास दो अंतरराष्ट्रीय खिताब हैं; रजत और स्वर्ण। मैं अब पैसों की वजह से अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं ले रहा हूँ। खिलाड़ी हाथी की तरह होता है, उसे खरीदना आसान है, लेकिन उसे खिलाना मुश्किल। मेरे खाने का खर्च 400-500 रुपये प्रतिदिन हो सकता है, उपकरण महंगे हैं, जूते और कपड़े कस्टम मेड हैं, इसलिए सब कुछ महंगा है; मुझे ये सारी सुविधाएँ कहाँ से मिलेंगी। लेकिन मैं फिर भी राष्ट्रीय स्तर पर खेलता हूँ और जीतता भी हूँ। मैं आने वाले एशियाई खेलों में जीतना चाहता हूँ, अगर मोदी जी मेरी मदद करें तो मैं देश के लिए पदक ज़रूर जीतूँगा।

प्र.हम आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति का सम्मान करते हैं। तर्कसंगत समुदाय के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर- "मेरा नाम भारत कुमार है और मैं एक अंतरराष्ट्रीय एथलीट हूँ। कृपया मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करें, मेरी मदद करें, मुझे आर्थिक मदद की ज़रूरत है। कृपया मुझ पर दया न करें; मैं शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत मज़बूत हूँ, हो सके तो आप मुझसे लड़कर देखें। मुझे बस आपका साथ चाहिए; मुझे देश से मदद चाहिए। अगर आप मेरी मदद करेंगे, तो मैं देश के लिए मेडल जीतकर दिखाऊँगा।"

मैं अपने माता-पिता का सपना पूरा करना चाहता हूँ। मैंने कहीं सुना था, "गरीबी में पैदा होना पाप नहीं है, लेकिन गरीबी में मरना पाप है", इसलिए मैं नहीं चाहता कि वे गरीबी में मरें। ईश्वर ने हमें जीवन दिया है, माता-पिता ने जन्म दिया है, अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम कितनी मेहनत करते हैं और कितनी दूर तक जाते हैं। यह सब आपके सपनों और जुनून पर निर्भर करता है।"

"पैदा हुए और घिस-घिस के मर गए।" मुझे ऐसी ज़िंदगी पसंद नहीं। मैं एक योद्धा हूँ, चिल्लाऊँगा, रोऊँगा, लड़ूँगा, लेकिन अपनी मंज़िल तक पहुँचूँगा। कोई भी स्टार पैदा नहीं होता, आप अपने सपने को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, आपके पास बस एक ही ज़िंदगी है, तो क्यों न कुछ सार्थक करते हुए जीया जाए।" ★★

ॐकार फाउन्डेशन द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए Winter Carnival (क्रिसमस पार्टी) का आयोजन हुआ

१६ दिसंबर २०२५ के दिन पालडी के अन्नपूर्णा होल में ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के मनोदिव्यांग छात्रों के लिए क्रिसमस पार्टी का सुंदर आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में १०० से अधिक मनोदिव्यांग बच्चों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया था । दीप प्राकट्य के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । कार्यक्रम में उपस्थित सभी बच्चों के लिए नाश्ते का सुंदर प्रबंध किया गया था । सभी बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम का आनंद उठाया था ।

CARNIVAL
16/12/2025, Tuesday

WINTER

स्मित चाईल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट ने मनोदिव्यांग छात्रों के लिए आउटडोर खेलोत्सव का आयोजन किया

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए हमेशा कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर नवा वाडज द्वारा आज मनोदिव्यांग बच्चों के लिए आउटडोर खेलों का आयोजन किया गया था। इस खेलोत्सव में 100 से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया था। खेलों में हिस्सा लेने वाले सभी बच्चो को टोकन इनाम और विजेता बच्चों को पुरस्कार प्रदान किया गया था। खेलों की पूर्णाहूति के बाद सभी बच्चों के लिए मनभावन लंच का आयोजन भी किया गया था। इस प्रसंग में गायत्री परिवार नारणपुरा के सदस्य कनुभाई परीख एवं अन्य लोगों ने उपस्थित रहकर बच्चों का उत्साह बढाया था।

नवजीवन ट्रस्ट ने मनोदिव्यांग बच्चों के लिए सोलो डान्स कम्पिटिशन का आयोजन किया

क्रिसमस सेलिब्रेशन के उपलक्ष्य में नवजीवन कल्चर ग्रूप फोर इन्टेलेक्च्युअल डिसेबल के 28 छात्रों के लिए सोलो डान्स कम्पिटिशन का आयोजन किया गया था । इस आयोजन में मोडरेट केटेगरी के 14 छात्रों ने जोश ग्रूप के अंतर्गत पर्फोर्मन्स दिया था । हर ग्रूप की पाँच कृतियों को पुरस्कार प्रदान किया गया था । इस कम्पिटिशन में उपस्थित सभी के लिए डिनर और डान्स का आयोजन किया गया था । कल्चर ग्रूप के को ओर्डिनेटर श्री कृतिकाबहन प्रजापति पिछले 2 सालों से नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट के बच्चों को आर्ट और डान्स सिखाती हैं । कार्यक्रम का संचालन श्री निलेशभाई पंचाल ने किया था।

सीलीगुडी में आयोजित एडवेन्चर केम्प में गुजरात में से केवल नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट के मनोदिव्यांग छात्रों ने हिस्सा लिया

हिमालयन नेचर एण्ड एडवेन्चर फाउन्डेशन सीलीदुडी-पश्चिम बंगाल द्वारा १८ दिसंबर से २३ दिसंबर तक केवल दिव्यांगों के लिए आयोजित ३४वें ऑल इन्डिया एडवेन्चर और नेचर स्टडी केम्प २०२५ जो कम्पाउन्ड फोरेस्ट विलेज ग्राउंड, सामसिंग, पश्चिम बंगाल जिला कालीम्पोंग में आयोजित हुआ था । हम सब के लिए यह गौरवपूर्ण बात है कि इस केम्प में गुजरात में से केवल नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित मनोदिव्यांग संस्था के पांच छात्र द्रष्टि, तुलसी, प्रणव, प्रीत और जीनल ने हिस्सा लिया था । पाँचो छात्रों के साथ उनके एस्कोर्ट के रूप में संचालक निलेश पंचाल और शिक्षक संगीता पंचाल ने भी हिस्सा लिया था । स ३४ वें केम्प में राजस्थान, गुजरात, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, आसाम और उत्तर बंगाल के तीन जिलों कुल १७५ प्रतिभागी थे जिस में से ७८ विशेष आवश्यकता वाले छात्र (CWSN) केम्पर्स, ४० एस्कोर्ट्स, ३२ केम्प गाईड, और २५ अधिकारी और स्वयंसेवकों का समावेश होता है । इस केम्प के आयोजन से सलामत, संरचित कार्यक्रमों के द्वारा बच्चों और युवाओं को वन्य इकोसिस्टम, नदियां, पर्वत और स्थानीय समुदायों को प्रति नेचर एन्ड एडवेन्चर का अनुभव करवा के सर्व समावेशी प्रकृति शिक्षा में एक नयी पहल की है । इस प्रकार के कार्क्रमों के कारण दिव्यांग लाभार्थियों में आत्मविश्वास, पर्यावरणीय जागृति और सामाजिक जिमेमदारी का विकास होता है । ७८ CWSN केम्पर्स में द्रष्टी की क्षति, (VI), श्रवणीय क्षति, (HI), बौद्धिक और विकासलक्षी दिव्यांगता (IDD), हिलचाल की दिव्यांगता (LD), ओटीजम स्पेक्ट्रम डिस ओर्डर (ASD) और बहुविध दिव्यांगता

का समावेश होता है । पांच दिन के इस केम्प में प्रकृति पाझ, पक्षी निरीक्षण, खेल, विशेषज्ञों के साथ संवाद और संरक्षण कार्यों के द्वारा प्रकृति के साथ के बंधन को और मजबूती प्रदान होती है । केम्प में आए प्रतिभागी वन संरक्षण, मानव-वन्यजीवन संवादिता, आबोहवा परिवर्तन और टिकाउ के बारे में जानकारी और समझ विकसित करते हैं । जो समझ और ज्ञान वर्गखंडों में नहीं मिल सकता वह इस प्रकार के केम्प के माध्यम से अच्छी तरह से मिल सकता है । कई दसकों तक किए गए इस प्रकार के कार्यक्रमों और आयोजनों से ही प्रकृति के प्रति जागरुक नागरिकों की वृद्धि हो सकती है । हम बार बार सुनते हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय के पर्वतों का पिघलना शुरु हो गया है अगर इस प्रकार की आपदाओं से मुक्ति पानी है तो लोगों को जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए उठाने वाले ठोस कदमों के बारे में जागरुक करना पडेगा ।

निलेश पंचाल-संचालक

विश्व विकलांगता दिवस के उपलक्ष्य में मनोदिव्यांग छात्रों के लिए चित्र स्पर्धा का आयोजन

३ दिसम्बर को समग्र विश्व में विश्व विकलांगता दिवस को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है । इस दिवस का विशेष महत्व है कि हम संसार के सभी दिव्यांगो को मुख्य धारा में उन्हें समान अवसर प्रदान करें, उनके प्रति संवेदनशील बने । इसी उपलक्ष्य में ३ दिसंबर के दिन नवजीव चेरीटेबल ट्रस्ट के ८५ से अधिक मनोदिव्यांग छात्रों को दो ग्रूप में बांटकर तत्काल चित्र स्पर्धा का आयोजन किया गया था । मुख्य अतिथि के रूप में जिला संगीत नाट्य अकादमी के अधिकारी श्री मिनलबहन की विशेष उपस्थिति थी । छात्रों ने विभिन्न थीम पर सुंदर चित्र बनाए थे जिस में से ५ श्रेष्ठ चित्रों को पुरस्कार दिया गया था । स्पर्धा में प्रतिभागी होने वाले सभी बच्चों को आर्ट कीट उपहार के रूप में दी गई थी । इस स्पर्धा का हेतु विश्व विकलांगता का उत्सव तो था ही साथ ही साथ मनोदिव्यांग छात्रों में छिपी कला को बाहर लाने का अवसर प्रदान करना भी था ।

नवजीवन ट्रस्ट ने मनोदिव्यांगजनों के लिए किया स्पोर्ट्स डे का आयोजन

नवजीवन ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के ८४ मनोदिव्यांग छात्रों ने २७ दिसंबर के दिन मेमनगर में दिव्यपथ स्कूल के सामने स्थित औड़ा गार्डन में स्पोर्ट्स डे का आयोजन किया था । मनोदिव्यांग छात्रों की क्षमताओं को ध्यान में रखकर माइल्ड और मोडरेट छात्रों के लिए रन और थ्रो बोल जब कि सीपी और सिवियर छात्रों के लिए बकेट बोल और थ्रो बोल जैसे खेलों का आयोजन किया गया था । इस आयोजन में विजेता छात्रों को इनाम के रूप में स्कूल बैग और साथ ही हिस्सा लेने वाले छात्रों को टोकन इनाम दिया गया था । टोकन इनाम में स्वेटर और पैरों के मौजे दिए गए थे । बच्चों के इनामो के लिए लायन्स क्लब ऑफ संवेदना की ओर से सहाय दी गई थी । इस खेल महोत्सव में बच्चों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था भी की गई थी ।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर